समकालीन भारतीय साहित्य : विविध विमर्श

विविध विधाओं के संदर्भ में

भाग –१

प्रधान संपादक

प्रो. सीताराम के. पवार

सह संपादक

प्रो. प्रभा भट्ट

डॉ. एल. पी. लमाणी

डॉ. शीला. चौगुले

डॉ. नीता दौलतकर

हिन्दी विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड

Scanned by CamScanner

समकालीन हिन्दी साहित्य : विविध विमर्श

(Collective Essays Presented at International Conference on "Diverse Criticism in Contemporary Indian Literature)

प्रधान संपादक	: प्रो. सीताराम के. पवार
©	: प्रधान संपादक
प्रकाशक	: अमन प्रकाशन कानपुर
मुद्रक	: सरस्वति प्रिंटर्स, धारवाड
वर्ष	: २०१८
पृष्ट	: ६३१+१२
ISBN	: 978-93-86604-74-3
मूल्य	: ३००
प्रतियाँ	: ३००

सभी हक सुरक्षित है ।

प्रस्तुत पुस्तक में प्रकाशित आलेख, विभिन्न विचार, आदि लेखक के हैं । अतः संपादक, संपादक मंडल, मुद्रक तथा प्रकाशन इसके लिए जिम्मेदार नहीं है ।

Scanned by CamScanner

24.	दलित आत्मकथाओं में चेतना	डॉ.बळीराम संभाजी भुक्तरे	81
25.	वैश्विक स्थर पर समकालीन दलित विमर्ष	डॉ.मालतेश स. बसम्मनवर	84
26.	दलित साहित्य विमर्श	डॉ. देविदास मल्लप्पा तेलंग	87
27.	हिंदी साहित्य में दलित विमर्ष	प्रा. नयन भादुले–राजमान	91
28.	दलित विमर्शा	श्रीमति कान्ती बाबुराव	93
29.	'षिंकजे का दर्द' संघर्षत दलित स्त्री की कथा	प्रा. रगडे परसराम रामजी	97
30.	मधु कांकरिया कृत 'सेज पर संस्कृत' उपन्यास में नारी	श्रीमक्ती देवकी प्रसन्ना.जी.एस.	101
31.	हिमांषु जोशि के कथा–साहित्य में वृद्द जनों के प्रति संवेदना	डॉ.अरूणा,	104
32.	स्त्री-विमर्श के विशेष संदर्भ में वैयक्तिक संघर्ष से 'सोशियल स्ट्रगल'तक का सफर मैत्रेयी पुष्पा का लेखन-	डॉ.गोविंद गुंडप्पा शिवशेट्ट	108
33.	मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में स्त्री विमर्श	डॉ. रोहिणी ज. पाटील	111
34.	सुशीला टाकभौरे के कहानी संग्रह 'जरा समझो' में -दलित विमर्श	जगदीश नायक	115
35.	हिन्दी साहित्य में अविवाहित,नारीः एक अध्ययन	डॉ. के.वी.क णमोहन,	119
36.	हिंदी में दलित साहित्य का विमर्श	डॉ. बापुराव वि. पाटील	122
37.	महुए के फूलष आदिवासियों की दारुण व्यथा	डॉ. मीना जाधव	126
38.	हिंदी दलित साहित्यः एक दृष्टिक्षेप	डॉ. सदाशिव जे. पवार	129
39.	मराठी भाषिक उपेक्षित जनसमुदायों की लोकपरंपराएँ	डॉ. मिलिंद सालव	133
40.	डॉ. रमेंश चौधरी 'आरिगपूडि' जी के उपन्यासों में नारी के विविध रूप	डॉ. नारायण गुरूसिध्द बगली	137
41.	किन्नर समुदाय का सामाजिक प्रतिबिम्ब	डॉ0 राजेष स्वामी	141
42.	पुरूषी समाज व्यवस्था में नारी की उपेक्षित स्थिती	डॉ सुभाष राठोड	144
43.	आधुनिक हिन्दी साहित्य में दलित चेतना	डॉ.बी.एस्.अंडगी	147
44.	गिलिगडु में वष्ध्द जीवन	डॉ. सविता तायड	149
45.	मंजूर एहतेशाम की कहानियों में चित्रित नारी के विविध रुप	फिरोज बालसिंग	152
46.	समकालीन हिन्दी नाटकों में आदिवासी विमर्ष	प्रा.डॉ. बालाजी बळीराम गरड	155
47.	हिंदी नवजागरण और स्त्री	षिवषंकर ईष्वरकट्टी	158
48.	हिन्दी कथा साहित्य में नारी संवेदना	डॉ सुवर्ण गाड	161
49.	समकालीन लेखिकाओं की उपन्यासों में नारी चेतना	डॉ. कविता चांदगुडे	164

Scanned by CamScanner

हिंदी दलित साहित्य: एक दृष्टिक्षेप

डॉ. सदाशिव जे. पवार

दलित साहित्य से तात्पर्य दलित जीवन और उसकी समस्याओं पर लेखन को केंद्र में रखकर हुए साहित्यिक आंदोलन से है। दलितों का हिंदू समाज व्यवस्था में सबसे निचले पायदान पर होने के कारण न्याय, शिक्षा, समानता तथा स्वतंत्रता आदि मौलिक अधिकारों से भी वंचित रखा गया। उन्हें अपने ही धर्म में अछूत या अस्पृश्य माना गया। दलित साहित्य की शुरूआत मराठी से मानी जाती है। जहाँ दलित पैंथर आंदोलन के दौरान बडी संस्था में दलित जातियों से आये रचनाकारों ने आम जनता तक अपनी भावनाओं, पीडाओं, दु:खों-दर्दो को लेखों, कविताओं, निबंधों, जीवनियों, कक्षाओं, व्यंग्यों, कथाओं आदि के माध्यम से पहुँचाया। "दलित साहित्य, अपना केंद्र बिंदू मनुष्य को मानता है, दलित वेदना, दलित साहित्य की जन्मदात्री है। वास्तव में यह बहिस्कृत समाज की वेदना है।"

दलित साहित्य की अवधारणा:

समाज के उस वर्ग को, जिसे सबसे निम्न समझा जाता है, जिसका उच्च वर्गों के लोगों ने दमन किया, दबाकर रखा, दलित वर्ग कहा गया। लेकिन यह दलित वर्ग की सामान्य या अभिधात्मक संकल्पना है। देखा जाए तो आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक,, सांविधानिक लिंगीय दृष्टिकोणों से दलित शब्द भिन्न-भिन्न आयाम ग्रहण करता है। आर्थिक दृष्टि से दलित एक वर्गीय शब्द है। भारत एक गरीब देश है। यहाँ की आधी से ज्यादा आबादी आर्थिक दृष्टिसे दलित है। हिंदी विकीपीडिया के अनुसार दलित लेखक बंधु आग्रह पूर्वक अपनी इस बात पर अडे हुए हैं। दलित रचना वही है, जिसका रचनाकार दलित हो, जबकि गैरदलितों में ऐसे वरिष्ठ लेखक हैं जो अपने आग्रहों के नाते इस बात को नहीं मानते। वे दलित रचना उसे मानते हैं जिसकी अंतर्वस्तु दलित जीवन संदर्भोंवाली हो और जिसमें दलितों के सरोकार सन्निहित हो। तार्किक दृष्टि से देखा जाए तो यह बात तर्क संगत प्रतीत होती है, परंतु दलित लेखक उसे स्वीकार करने को तैयार नहीं है। दलित साहित्यकार तर्क देते हैं कि जिस स्वानुभूति में दलित गुजरता है वह गैर-दलित को हो ही नहीं सकती। जो भोगता है वही जानता है क्योंकि आपबीती का कोई विकल्प नहीं होता।

Scanned by CamScanner

वास्तव में प्राचीन भारतीय इतिहास पलटने पर दलित वर्ग की ऐतिहासिकता पर प्रकाश पडता है। प्राचीन भारत की जानकारी सामान्यतया ई. पू. १५९९ से मिलती है। जैसा कि हम इतिहास से जानते हैं कि वर्तमान भारतीय सभ्यता के निर्माता वैदिक जन थे, उनका दर्शन ब्राह्मणवाद रहा, इसे हिंदू दर्शन अथवा भारतीय दर्शन भी कहा जा सकता है। लेकिन वर्ग सदैव से संघर्षशील समाज का अविभाज्य अंग रहा है। आदिकाल से आज तक दलित दशा पर यदि विचार करें तो, अनेक परिवर्तनों के बावजूद उसका मूल संघर्ष आज भी यथावत् है।

दलित साहित्य का इतिहासः

दलित कथा लेखक/संपादक 'दुनिया का यथार्थ' (रमणिका गुप्ता) 'पुटुस के फल' (प्रहलादचंद दास), 'चार इंच की कमल' (डॉ. के. के. वियोगी), 'सलाम' (ओम प्रकाश वाल्मीकि), 'सुरंग', 'कफनखोर', 'आवाज टूटता वहम', 'जुडते दायित्व', 'अनुभूति के घेरे', 'अपमान', 'बुधिया की तीन रातें' आदि प्रमुख हैं। जब दलित समाज अनपढ था तब विवाह उत्सव पर स्वांग–नोटंकी आदि का आयोजन होता था। सबसे पहले स्वामी अछूतानंद ने 'रामराज्य का न्याय' और 'मायाराम' नामक नाटक लिखे। स्वातंत्रता के पूर्व इलाहाबाद में नंदलाल जैसवार ने 'इन्साफ' नाटक लिखा। 'कठोती में गंगा' (डॉ. एन. सिंह) 'अछूत का बेटा', 'धर्म के नाम पर धोखा', 'तडप', 'मुक्ति', 'वीरांगना ऊदा–देवी पासी', 'प्रतिशोध वीरांगना झलकारी बाई धर्मपरिवर्तन', 'अंतहीन बेडिया', (चालिस नाटक–एकांकी संग्रह) माता प्रसाद मित्र द्वारा लिखे गये 'एकलव्य' के जीवन पर आधारित नाटक, शोषितों के नाम संतोष का पैगाम, भीम सेन संतोष ने लिखा। ललई सिंह यादव के नाटक 'शंबूक वध' ने तहलका मचा दिया। इसी के साथ दो चेहरे, संवाद के पीछे, बारात नहीं चढेगी, रामराज का दरबार के अलावा जब 'रोम जल रहा था', 'नीरो वंशी बजा रहा था' (कंवाल भारती) नाटक भी चर्चित रहे। दलित निबंध भी लिखे गये। निबंध संग्रह–'नारी तन मन गिरवी कबतक?' (लेखक के. एस. तूफान) ने नारी विमर्श के साथ–साथ दलित चेतना से साक्षात्कार कराता है।

फुले ने ही पहली भारतीय शिक्षिका होने का गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त भी किया। आंध्रप्रदेश के कार्मी गाँव की आशम्मा का नाम भी दलित उत्थान में प्रमुख है। महाराष्ट्र के कोल्हाटी समाज में नाचगाने वाली औरतों में काम करनेवाली शांताबाई टीचर बनना चाहती थी, लेकिन सामाजिक प्रतारणाओं के कारण उसका सपना पूरा नहीं हो सका, लेकिन उसका बेटा किशोर शांताबाई काले पढ लिखकर डॉक्टर बन गया।

लक्ष्मण माने का आत्मकथात्मक उपन्यास 'ऊपरा' हिंदी में 'पराया'

Scanned by CamScanner

दलित साहित्य:

"दलित साहित्य की अवधारणा को लेकर लंबी बहसे चली, यह सवाल दलित साहित्य में प्रमुखता से छाया रहा कि दलित साहित्य कौन लिख सकता है, यानी स्वानुभूति ही प्रामाणिक होगी या सहानुभूति को भी स्थान मिलेगा। प्रमुख दलित साहित्यकारों ने कहा चूँकि सवर्णों ने दलितों की पीडा को भोगा नहीं, इसलिए वे दलित साहित्य नहीं लिख सकते। हालांकि यह मत ज्यादा दिनों तक टिका नहीं, लेकिन आरंभ में बहस का मुद्दा बना रहा। यह प्रश्न मराठी की तुलना में हिंदी में अधिक उठा। अंत में इस बात पर राय बनती नजर आयी कि दलित साहित्य अस्सी और नब्बे के दशक में उभरा एक साहित्यिक आंदोलन है। जिसमें प्रमुखता से दलित समाज में पैदा हुए रचनाकारों ने हिस्सा लिया और अलग धारा मनवाने के लिए संघर्ष किया।"

दलित साहित्य दलित प्रतिबध्दता की अभिव्यक्ति है। जब 'दलित' शब्द साहित्य से जुडता है तो एक ऐसी साहित्यिक धारा की ओर संकेत करता है जो मानवीय सरोकार और संवेदनाओं की यथार्थवादी अभिव्यक्ति बनता है। यह एक ऐसा साहित्य है, जिसमें दलितों ने स्वयं अपनी पीडा और शोषण के विरूध्द साहित्यिक अभिव्यक्ति दी है। साहित्यकार कोई विशिष्ट व्यक्ति नहीं होता, वह अपने अस्तित्व के लिए पग-पग पर समाज के ऊपर निर्भर करता है। समाज से अलग उसका कोई चिंतको की यह प्रतिबध्दता मानवतावाद और सामाजिकता के प्रति न्याय है।

साहित्य में दलित जीवन:

"एक टहनी, एक दिन पतवार बनती है,
एक चिंगारी दहक, अंगार बनती है,
जो सदा रौंदी गई मिट्टी समझकर
एक दिन, मिट्टी वही मीनार बनती है।"

दलित समाज शोषण और उपेक्षा का शिखार रहा है जिसके अनेक कारणों में मुख्य कारण हैं उसका अशिक्षित होना। लेकिन इसके साथ ही दलित साहित्य की लिखित एवं वाचिक परंपराओं का भी तीव्र विकास हुआ है। पिछली शताब्दी के पूर्वार्ध्द में महात्मा गांधी दलित कर्म अपनाने का साहस दिखाते हुए यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि छोटा बडा कोई नहीं होता। यह गांधीजी के सद्भाव में कोई कमी नहीं है, वह सद्भाव जाग्रत कर समस्या का समाधान चाहते हैं, लेकिन डॉ. भीमराव अंबेडकर शास्त्र और मिथकों के बल को निर्बल करना चाहते हैं, जो छोटे-बडे की भावना को पारंपारिक शक्ति देता है।

Scanned by CamScanner

नाम से प्रकाशित हो साहित्य आकदमी पुरस्कार पा चुका है। दलित लेखन, चाहे वह किसी भी विधा के रूप में सामने आया है। वह सवर्ण समाज पर जारी श्वेत पत्र सा लगता है। दलित प्रतिबंधों, अवरोधों, निषेधों और वचनाओं के बीच जीने का सनातन अभ्यस्त रहा है; लेकिन उसका आक्रोश लेखनी से सामने आया और जनमानस उद्वेलित हुआ। यदि कुल मिलाकर दलित विमर्श पर चर्चा करते समय सामाजिक, राजनीतिक एवं साहित्यिक संदर्भ तलाशें जायें, तो सभी का मूल स्वर मुख्य धारा से अलग रहने की छटपटाहट अभिव्यक्त करता है। लेकिन इस दिशा में आज तक संपन्न हुए सभी प्रयास निकट भविष्य में स्वयं ही मुख्य धारा बन जाने की दिशा में आश्वास्त करते हैं और यह आश्वस्ति दलित चेतना के संघर्ष जीजीविषा सहित उनकी संकल्पशक्ति से बल प्राप्त करती है।

प्रमुख हिंदी दलित साहित्यकार

आज लगभग सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं–मराठी, हिंदी, तेलुगु, गुजराती, कन्नड आदि में दलित साहित्य लिखा जा रहा है। जिसमें प्रमुख हिंदी के दलित साहित्यकार हैं–"धर्मवीर भारती, विपिन बिहारी, कैलाश वानखेडे, सोहन पाल सुमनाक्षर, अवनाश राही, कैलाश चंद्र चौहान, बिहारी लाल हरित, आनंद स्वरूप बौध्द, महाशय नत्थु राम, ताम्र मेली, प्रोफेसर शत्रुघ्न कुमार, ओमप्रकाश वाल्मीकि, धर्मवीर, मोहनदास नैमिशराय, कँवल भारती, संजीव खुदशाह, श्योराज सिंह बेचैन, तेज सिंह, सूरजपाल चौहान, जयप्रकाश कर्दम, तुलसी राम, चमनलाल, विमल थोरात, बुध्दशरण हंस, दयानंद बटोही, कौशल्या बैशंत्री, माता प्रसाद, चंद्रभान प्रसाद, सी. बी. भारती, उमराव सिंह जाटव, अजय नावरिया, रत्न कुमार सांभरिया, राजेश कुमार बौध्द, रजत रानी मीनू, डॉ. एन्. सिंह, ईश कुमार गंगानिया, दिलीप कठेरिया, अरविंद भारती, मुसाफिर बैठा, जगदीश पंकज, असंगघोष, अजय यतीश, रमा शंकर आर्य, कावेरी, देवनारायण पासवान देव, वीरचंद्र दास, तेजपाल सिंह तेज, सुदेश तनवर, सुनील कुमार सुमन, रजनी तिलक, हेमलता महीश्वर, प्रेम कपाडिया, डॉ. नरेद्र कुमार आर्य, अजय चौधरी, डॉ. विजय भारती और आदि।"

Scanned by CamScanner